15 अगस्त को मोदी की लाल किले की तकरीर के हिसाब से तो देश प्रगति पथ पर अग्रसर नजर आता है लेकिन वास्तविकता क्या है यह आर्थिक जगत की खबरों से समझा जा सकता है

रुपया की लगातार गिरती कीमतें.....

15 अगस्त को जब मोदी जी भारत की अर्थव्यवस्था को दौड़ता हाथी बताने में लगे थे उसके ठीक एक दिन पहले रुपया मे ऐतिहासिक गिरावट दर्ज की गई और यह डॉलर के मुकाबले 70.10 के सर्वकालिक निचले स्तर पर पहुंच गया (कुछ याद आया' जैसे जैसे रुपये की कीमत गिरती है देश के प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा गिरती है- सुषमा स्वराज 2013 मे)

व्यापार घाटा 5 साल के शीर्ष पर.....

लेकिन रुपये का गिरना सिर्फ एक कारक है अन्य कारक भी इसकी पुष्टि कर रहे हैं, देश का व्यापार घाटा 5 वर्षों के उच्चतम बिंदु पर पुहंच गया है वित्त मंत्रालय ने मंगलवार को जो आंकड़े जारी किए है उससे पता चलता है कि व्यापार घाटा कुल 18.02 अरब डॉलर हो गया है, मई 2013 के 11.45 अरब डॉलर के बाद इस महीने में हुआ व्यापार घाटा, सबसे अधिक व्यापार घाटा है7

विदेशी मुद्रा भंडार का कम होना.....

रुपये में तेज गिरावट पर सरकार ने कहा है कि चिंता की कोई बात नहीं हैं हम अपना फॉरेन रिजर्व बेचकर इसकी पूर्ति कर लेंगे लेकिन यह काम बहुत पहले से ही किया जा रहा है, इसी कारण विदेशी मुद्रा भंडार अप्रैल के 426 अरब डॉलर के रेकॉर्ड उच्च स्तर से लुढ़ककर अगस्त के शुरुआती हफ्ते में 403 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। अब यदि विदेशी मुद्रा भंडार में से ओर पैसा निकाला गया तो यह अर्थव्यवस्था के लिए खतरनाक माना जाएगा।

बचत खातों मे हर साल कम होती सेविंग्स.....

इंडिया रेटिंग्स ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि घरेलू बचत दर वित्त वर्ष 2012 से 2017 के दौरान 23.6 प्रतिशत से गिरकर 16.3 प्रतिशत पर आ गई है ओर ऐसा नोटबंदी और GST के कारण हुआ है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि घरेलू बचत दर में तेज गिरावट जारी रहती है तो यह देश की आर्थिक वृद्धि और वृहद आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती खड़ी कर सकती है।

चालू खाते का घाटा 6 वर्षों में उच्चतम पुहचने का अनुमान.....

भारत का करेंट अकाउंट घाटा (सीएडी) साल 2018 की दूसरी तिमाही तक 13.5 बिलियन पहुंच गया है. जो इसी अवधि में पिछले साल के घाटे से 87 फीसदी तक ज्यादा है7 बाजार के जानकारों का मानना है कि इस वित्तीय वर्ष में ये घाटा छह सालों के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंचने वाला है। 7 महीनों में पहली बार जुलाई में सोने का आयात बढ़ा है, इससे भी राजकोषीय घाटे की स्थिति खराब हुई है।

एविएशन सेक्टर अपने सबसे बुरे दौर में.....

देश की दो सबसे बढ़ी एयरलाइंस कम्पनियां अपना कामकाज बन्द करने की स्थिति में पुहंच चुकी हैं, एयर इंडिया की हालत तो यह है कि वह अपने 11 हजार एंप्लॉयीज की सैलरी भी ठीक से बांट नही पा रही है। खबर है कि उसने अपनी कर्मचारियों को सैलरी देने में लगातार चौथे महीने देरी की है, एयर इंडिया के करीब एक चौथाई एयरक्राफ्ट बेकार खड़े हैं, क्योंकि उनके स्पेयर पार्ट्स नहीं हैं7

जेट एयरवेज किसी भी दिन अपने आपको दीवालिया घोषित कर सकती है उसके पास सैलरी ओर अन्य खर्चो को मात्र 2 महीना चलाने के लिये पूँजी नही है7

बढ़ता NPA बेहद खतरनाक स्तर पर.....

यह खबर आर्थिक जगत की सबसे बढ़ी खबर है कि रिजर्व बैंक ने 200 बड़े कर्ज खातों की निगरानी शुरू कर दी है। बैंक ने इन कर्जों के एवज में संबंधित बैंक द्वारा किए गए प्रावधानों और उनके दबाव के स्तर का आकलन के वास्ते इनकी जांच शुरू की है। इनमें विडियोकॉन, जिंदल स्टील ऐंड पावर समेत कुछ अन्य बड़े खाते शामिल। दरअसल बैंकिंग क्षेत्र का सकल एनपीए बढ़कर 10.3 लाख करोड़ यानी सकल कर्ज का 11.2 प्रतिशत हो गया है। पिछले साल 31 मार्च 2017 को यह आंकड़ा 8 लाख करोड़ यानी 9.5 प्रतिशत था। यह भी कहा जा रहा है कि 3 लाख करोड़ ऐसा है जिसे बैंको ने अब तक NPA नही दर्शाया है, यह रकम जब सामने आएगी तो बैंकिंग व्यवस्था के ढहने का संकट और गहरा हो जाएगा।

यह हालत है अर्थव्यवस्था की, जिसे दौड़ता हाथी बताया जा रहा है सच बात तो यह है कि अर्थव्यवस्था के हाथी को मंदी के मगरमच्छ ने पकड़ रखा है।

खबर (दार) झरोखा — **विकास नारायण राय**

मैक्सिको सीमा पर भारतीय घुसपैठियों को मोदी की बदनाम छवि का सहारा

दरअसल, मुन्नी बदनाम हुयी..... बॉलीवुड के इस लोकप्रिय फिल्मी गीत की तर्ज पर मैक्सिको सीमा से अमेरिका में अवैध रूप से दाखिल होते भारतीय भी चाहें तो आज गा सकते हैं- मोदी बदनाम हुआ.....

आखिर मोदी सरकार की अल्पसंख्यकों के प्रति व्यवहार को लेकर बदनामी इन अवैध अप्रवासियों के बड़े काम जो आ रही है। मुख्यत: पंजाब से निकलने वाले सिख, भारत में धार्मिक और राजनीतिक उत्पीड़न का हवाला देकर अमेरिका में प्राय: इस आधार पर शरण मांगते मिलेंगे। लॉस एन्जेल्स टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार उनका मुख्य तर्क होता है कि शासक भारतीय जनता पार्टी उन्हें औरों के प्रति हिंसा करने और ड्रग पहुँचाने के लिये मजबूर करती है।

असम के पापुलेशन रजिस्टर में 'बांग्लादेशी घुसपैठियों' को चिह्नित करना मोदी समर्थकों को चुनाव जीतने के लिए एक भावनात्मक मुद्दा नजर आता है। कुछ वैसा ही हाल ट्रम्प समर्थकों का भी मैक्सिको सीमा से अमेरिका में घुसने वाले अवैध अप्रवासियों को लेकर रहा है। दुनिया भर में बढ़ते प्रवासी संकट ने इसे और उत्प्रेरित किया है।

प्रधानमन्त्री मोदी ने इस बार लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन में बेशक देश में तांडव करती हिन्दुत्ववादी कट्टरता और बढ़ती मॉब लिंचिंग का जिक्र न किया हो लेकिन अमेरिका में भारत की यही छवि मैक्सिको रूट से जाने वाले हमारे अवैध घुसपैठियों के काम आ रही है। लॉस एन्जेल्स टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण कैलिफोर्निया के विक्टोर्विले फेडरल प्रिजन में निरीक्षण के लिए गये डेमोक्रेट कांग्रेसमैन मार्क टकानो भी दंग रह गए जब उन्हें वहां बंद सैकड़ों अवैध अप्रवासियों में चालीस प्रतिशत भारत से आये हुए लोग मिले।

जाहिर है, भारतीय शरणार्थी बेहतर रोजगार के अवसरों की तलाश में मैक्सिको रूट का यह बढ़ा जोखिम ले रहे हैं। भारत से दुबई, इटली, जर्मनी, मैक्सिको, और वहां कुछ दिन रुक कर मौका पाते ही मैक्सिको सीमा पर दीवार पार कर अमेरिकी बॉर्डर पैट्रोल की गिरफ्त में। यह सब बावजूद इसके कि मैक्सिको रूट को बंद करना राष्ट्रपति ट्रम्प ने अपना व्यक्तिगत एजेंडा बना रखा है। हालाँकि, यूएस कस्टम एंड बॉर्डर प्रोटेक्शन के मुताबिक पकड़े जाने पर भारतीय शरणार्थी धार्मिक और राजनीतिक उत्पीड़न के निशाने पर होने का दावा करते हैं।

और आप क्या सोचते थे कि मैक्सिको के रास्ते सिर्फ लैटिन भाषी लोग ही अमेरिका में घुसते हैं। कैलिफोर्निया की सायराक्यूज यूनिवर्सिटी के ट्रांसैक्शनल रिकार्ड्स एक्सेस क्लीरिंगहाउस के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2018 में अभी तक कुल 4,19। भारतीय नागरिक मैक्सिको सीमा से अमेरिका में अवैध रूप से घुसते पकड़े गए हैं।

दरअसल, मोदी राज में इनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी है। जहाँ 2015 में मैक्सिको सीमा पर किसी माह में अधिकतम दो सौ भारतीय शरणार्थी पकड़े गए, 2016 और 2017 में यह संख्या चार सौ और 2018 में आठ सौ हो गयी।

भारत में रोजगार के मोर्चे पर 'अच्छे दिन' के लक्षण तो नहीं ही हैं ये। यह तो साफ है कि प्रधानमन्त्री मोदी के लाख 'अच्छे दिन आयेंगे' दोहराने के बावजूद भारत से अवैध बाहर जाने वालों की कतार लम्बी ही होती गयी है। ये सभी वित्त मंत्री अरुण जेतली के दोस्त विजय माल्या जैसी किस्मत वाले तो नहीं हो सकते कि भारतीय जेलों में हवा-रोशनी की कमी का हवाला देकर विदेशों में रहने का हक मांगें। हाँ, सभी मोदी के मेहुल भाई की तर्ज पर भारत में मॉब लिंचिंग के खतरे का हवाला जरूर दे रहे हैं।

हालाँकि, अमेरिकी बंदी गृहों में महीनों प्रतीक्षारत इन शरणार्थियों की तंगहाली भी कम नहीं। यहाँ तक कि सिखों को धार्मिक प्रतीक चिन्ह, पगड़ी और कड़ा भी उतारना पड़ता है। क्लीरिंगहाउस के अनुसार, 2012 से 201। के बीच बयालीस प्रतिशत भारतीय शरणार्थियों की अमेरिका में शरण की प्रार्थना ठुकरा दी गयी।

लॉस एन्जेल्स टाइम्स की रिपोर्टर सारा पर्विनी ने पंजाब के बीस वर्षीय सुखविंदर की मार्मिक कहानी बयान की है। उसे गत वर्ष एक कार में आये भाजपा के युवाओं ने हाकियों से बुरी तरह पीटा क्योंकि उसने मत भिन्नता के चलते उनकी पार्टी में शामिल होने से मना कर दिया। परिवार ने सोना और अनाज बेचकर उसके देश से बाहर जाने का प्रबंध किया।

अमेरिका में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के ग्लोबल पालिसी स्कूल के असिस्टेंट प्रोफेसर गौरव खन्ना का मानना है कि भारत में भाजपा का शासन आने के बाद धार्मिक और राजनीतिक उत्पीड़न में वृद्धि हुयी है। इसी यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग के प्रोफेसर विनय लाल के मुताबिक उन्होंने लोगों को राजनीतिक उत्पीड़न से बचने के लिए भारत से अमेरिका आने के सबूत नहीं देखे हैं, लेकिन यह संभव है।

इस पृष्ठभूमि में यदि भारतीय घुसपैठिये भी विदेशों में शरण हथियाने के लिए मोदी शासन की बदनाम फासीवादी छवि का बहाना ले रहे हों तो आश्चर्य क्या! क्या इसे भी मोदी के औसतन प्रति माह दो देशों की यात्रा करने का ही हासिल कहा जायेगा?

पानी मांगा जाना बड़ी घटना है, लाल किले पर राष्ट्रगान के दौरान पीएम ने पानी पीया

मधुवनदत्त चतुर्वेदी

पीएम ने चुनाव जीतते ही दो-तीन बातें कहीं थीं जिनपर गौर करने से इस घटना को समझने का एक कोण मिलता है --

1. यह संघ की पांच पीढ़ियों की तपस्या का फल है,

2. पहली बार ऐसे लोगों की सरकार आयी है जिनका गोत्र कांग्रेसी नही है,

3. पहली बार चुनाव ऐसे नेतृत्व के बीच हुआ है जो आजादी के बाद जन्मे हैं।

संघ की आदिपीढ़ी से खुद को जोड़ना जो आजादी के बाद भी दशकों 'राष्ट्रध्वज' और 'राष्ट्रगान' को अलल एलान अस्वीकार करते रहे हों, कोई मामूली बात नही थी।

'गैर कांग्रेसी गोत्र' शब्दविन्यास गांधीयुगीन समूची राजनीति से अलगाव का द्योतक था, और तीसरी बात स्पष्टत: स्वतंत्रता आंदोलन के उत्तराधिकार से पल्ला झाड़ने की घोषणा थी।

जिस आरएसएस के लोग आज भी गुरुदेव रवींद्रनाथ और उनके लिखे राष्ट्रगान का अपमान करते राजीव दीक्षित के ऑडियो शिद्दत से शेयर करते हैं, आज भी गौडसे को महिमामंडित करते हैं, 'राष्ट्रपिता' को खलनायक निरूपित करते हैं, उनकी हार्दिक निष्ठा तिरंगा या राष्ट्रगान में हो भी कैसे सकती है !

उनके लिए तिरंगा हाल के कुछ सालों में तब उपयोगी हुआ है जब तिरंगा हाथ मे लेकर दंगा करना आसान हुआ है।

तिरंगा फहराने की आजादीसंबंधी सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से पहले संघियों को तिरंगे के उपयोग का कोई विचार न था।

ऐ हिन्दुस्तान, इस तस्वीर को तू दिखाता क्यूं नहीं हमारी बलिदानी के इतिहास को तू बताता क्यूं नहीं

देशभक्ति की सजा दिये जाने के बाद पंजाब से काला पानी जाते हुए सन 1938 बाम्बे रेलवे स्टेशन पर खींची तस्वीर

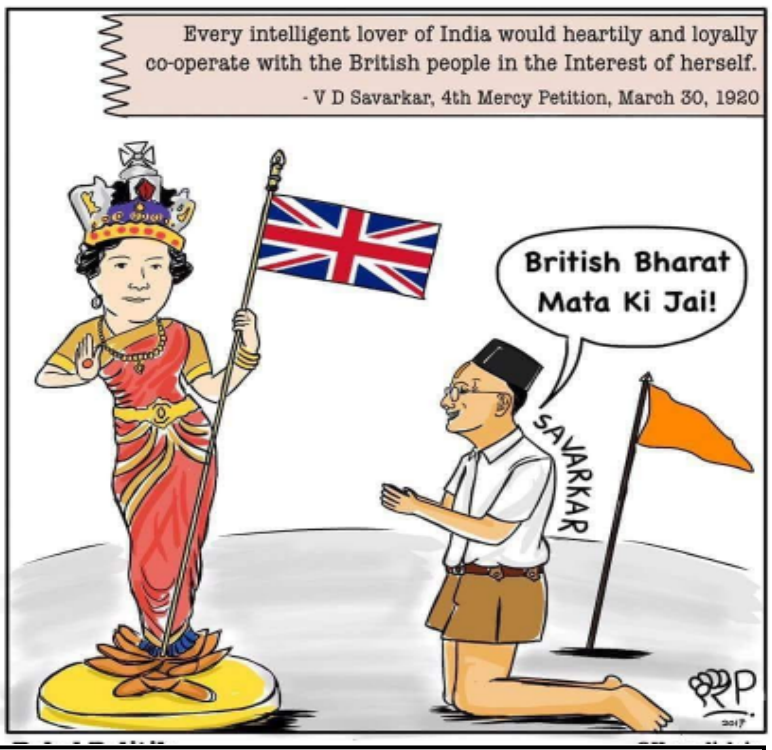

अटल बिहारी वाजपेयी ने बतौर प्रधानमंत्री हिन्दुत्व के ठेकेदार सावरकर को भारत रत्न प्रदान किया था और उनकी तस्वीर संसद के केन्द्रीय कक्ष में लगायी थी। सावरकर, 1924 में माफी मांगकर छूटने के बाद ब्रिटिश साम्राज्य का वफादार पिट्ठु बन गया था। न सिर्फ वह अंग्रेजपरस्ती में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेता था बल्कि उसने अन्य क्रांतिकारियों की ओर से पूरी तरह मुंह मोड़ लिया था। काला पानी जाते हुए वीरों की कतारें भी उसे नजर नहीं आती थीं।

नरेंद्र मोदी की राष्ट्रगान के प्रति अनिष्ठा के राजनैतिक और ऐतिहासिक कारण हैं। यदि इन्हें हटाकर सोचें तो भी गंभीर सवाल उठते हैं, मसलन --

1. क्या पीएम बीमार हैं?

2. क्या पीएम का स्टेमिना इतना कमजोर है कि वे 52 सेकण्ड प्यास नहीं रोक सकते थे?

3. क्या उनकी छप्पनिया छवि भी रामदेव की योगी छवि जैसी नकली है जो थोड़े से अनशन में ही एलोपैथिक अस्पताल में भर्ती हो गया जबकि शहद और नीबू का पानी लगातार ले रहा था ?

4. पीएम की कमजोर शारीरिक स्थिति का संदेश देश के दुश्मनों को अपनी रणनीति बनाने में मदद नही करेगा?